Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

"उत्तर मध्यकालीन रीतिबद्ध का काव्यधारा के गौण महाकवि भूषण"

डॉ. मालती बी. पाण्डे
धर्मेन्द्रसिंहजी आर्ट्स कॉलेज, राजकोट

यद्यपि महाकवि भूषण रीतिबद्ध काव्य परम्परा के अन्तर्गत ही आते है रीतिबद्ध अन्य कवियों के समान राज्याश्रित भी थे । किन्तु अन्य रीतिबद्ध कवियों के समान न तो इनकी मूल प्रवृत्ति श्रृंगारमयी है और न शास्त्रानुमोदित अन्य रसाश्रित । कवि ये युगानुकूल अलंकार प्रियता भी इनके अन्दर दिखाई देती है और ये परम्परा से हट कर अन्य रसों की अपेक्षा वीर, रौद्र बीभत्स रस की भावना से ओतप्रोत है । ऐसा नहीं कहा जा सकता कि आदिकाल से लेकर जो एक अखण्ड वीर काव्य की धारा तरंगायित हुई थी वह भूषण में ही आकर सीमट गयी । भूषण चन्द्रशेखर के समकालीन लाल सूदन आदि वीर काव्य के ओजसवी कवि हैं । किन्तु युग के अनुकूल जो स्वाभिमान और दर्प की भावना भूषण में परिकलक्षीत होती है । वह अन्यत्र प्रशंसा मयी वाणी विलास की स्पृहा में चुक जाती है और भूषण निपट निराले ओजस्वी भाव के कवि ठहरते हैं । ऐसे क्यों है इसकी चर्चा हम आगे करेगें । महाकवि भूषण के जन्म और नाम के सम्बन्ध में पर्याप्त विवाद हैं । जिसकी चर्चा शुकदेव मिश्र और विशेषकर आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्रने अपनी ग्रन्थावलियों में की है । इतना ही नहीं कुछ लोग इनके आश्रय दाता के सम्बन्ध में भी शंका उठाते हैं की ये महाराज शिवाजी के समकालीन न होकर उनके पौत्र साहू के समकालीन थे । किन्तु अनुसंधान कर्ताअंने नेक तथ्यों के आधार पर यह प्रमाणित कर दिया है कि भूषण महाराज शिवाजी के राज्याश्रित कवि और उन्हीं के समकालीन थे । इनके बड़े भाई नाम चिन्तामणि(कवि) छत्रशाल शिवाजी के पिता संभाजी भोसले के आश्रय में रह चुके थे । यह भी निर्विवाद है कि चिन्तामणि भूषण और मतिराम तीनों ही सगे भाई थे । कुछ अनुसंधित्सु इनके चौथे भाई के नाम का उल्लेख भी करते हैं जो नीलकंठ या जटाशंकर था । भूषण कान्यकुब्ज वंसीय कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी ब्राह्मण थे । इनके पिता का नाम रत्नाकर था और वे कानपुर के अन्तर्गत यमुना नदी के समीप स्थित तिकवाँपुर (त्रिविवुमपुर) के रहनेवाले थे । जहाँ आज भी इनका परिवार और घर विद्यमान है । भूषक का जन्म

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सम्वत् १६९५ के आसपास माना जाता है । ये परिस्थितियों बस प्रारंभ में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त नहीं कर सके थे । पर ऐसी निजंधरी कथा है कि अपनी भावज क ताने का इनके मन पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि इन्हों ने विद्या अध्ययन के लिए धोर परिश्रम किया और उस परिश्रम के फलस्वरूप (कारण) जन्मजात स्वभाव प्रतिभा के फलस्वरूप ये काव्य में भी विदग्ध हो गये । तदुपरान्त तीस वर्ष की अवस्थामें ये चित्रकूट के प्रशासक हृदयराम के पुत्र रूद्रराम सोलंकी के यहाँ गये और समस्त दरबारीयों को अपनी कविता से मंत्रमुग्ध कर दिया । इससे प्रसन्न होकर रूद्रराम सोलंकी ने इन्हें कविभूषण की उपाधि प्रदान की । इस बात का समर्थन भूषण रचित 'शिवराज भूषण' के निम्न लिखित छन्द से भलि भाँति हो जाता है ।

"कुल सुलं कि चित्रकूट पति साहसशील – समुद्र ।
कवि भूषण पदव दई, हृदयराम सुत रूद्र ॥

इसके उपरान्त भूषण की प्रशस्ति दिगन्त व्यापी हो चली । कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि भूषण औरंगजेब के यहाँ भी गये थे । परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं है । सम्वत् १७२४ विक्रम में भूषण शिवाजी के यहाँ गये और उनके दरबार में उनकी प्रशस्ति से भरा हुआ अपना एक छन्द सुनाया । कहते हैं कि महाराज शिवाजी उस छंद पर इतने मन्त्रमुग्ध हुए कि उसे अढारह बार सुना और प्रसन्न होकर इन्हें अठारहलाख स्वर्ण मुद्राएँ अठारह हाथी और अठारह ग्राम (गाँव) पुरस्कार में दिया । इतना ही नहीं इन्हें हृदय से लगाते हुए ससम्मान अपना राजकवि नियुक्त किया । यहीं रह कर भूषणने सम्वत् १७३० विक्रम में अपना सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'शिवराजभूषण' या 'शिवभूषण' की रचना की जो एक विशाल काव्य रीति ग्रन्थ है जिसके अन्तर्गत तीनसौ पचासी पद्यों द्वारा सलक्षण एक सौ (१०५) पाँच अलंकारों का निरूपण किया सम्तवत १७३१ विक्रम में ये शिवाजी के यहाँ से अपने घर लौट आये और रास्ते में उनकी भेंट बुन्देल केसरी महाराजा छत्रसाल से हुई । और महाराज छत्रसालने इनका बड़ा सम्मान किया । जिससे प्रसन्न होकर कविवर भूषणने छत्रसाल की प्रसंसा में 'छत्रसाल दशक के ग्रन्थ की रचना की । जिसमें मात्र दस छन्दों के माध्यमसे छत्र साल के वीरत्व 'औदार्य और दानवृत्तिका प्रशतिपूर्ण वर्णन है । कुछ समय के उपरान्त भूषण फिर महाराज शिवाजी के यहाँ गये और वहीं रहकर कुछ स्फुट छन्द कवि च की रचना की । जो उनके तीसरे

ग्रन्थ 'शिवाबावनी' में संग्रहित हैं । इसमें शिवाजी के शौर्य, उदाहरता संग्रहित है इन ग्रन्थों के सिवा जातीय स्वाभिमान और अनेक ऐतिहासिक युद्धों का वर्णन है । जिसके कारण अनेक मूर्धन्य आलोंचकों इन्हे एक राष्ट्र कवि के रूप प्रस्थापित किया है । कई अन्य ग्रन्थ भी भूषण के द्वारा लिखे गये कहे जाते है; जैसे 'भूषण हजारा', भूषण उल्लास, दूषण उल्लास आदि पर इनमें से आज कोई उपलब्ध नहीं है । केवल दूषण उल्लास नामक एक ग्रन्थ अवश्य उपलब्ध होता है । जो इनके बड़े भाई चिन्ता मणि के द्वारा रचित हुआ है । इतना ही नहीं वह 'दूषणउल्लास' चिन्तामणि के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कविकुल कल्प' का एक अध्याय मात्र है । इस प्रकार प्रमाणिकरूप से भूषण के तीन ग्रन्थ ही माने जा सकते है (१) शिवराज भूषण, (२) छत्र साल दशक, (३) शिवाबावनी कविवर भूषण दीर्धजीवी थे । इनकी मृत्यु वि.स.१७९७ में १०२ वर्ष की अवस्था में हुई । शिवाजी के स्वर्गवासी होने पर इनका सम्पर्क महाराज छत्रसाल और छत्रपति साहू के साथ निरन्तर बना रहा । साहूजी सम्वत् १७६४ वि. में दिल्ली से मुक्त हुए उसी समय के आस–पास इन्होंने साहूजी और छत्रसालजी दनों की सम्मिलित प्रशंसा करते हुए एक छन्द लिखा जो इस प्रकार है ।

"सजत अखण्ड तेज, छाजत सुजस बड़ो,
गाजत गयंद, दिग्गजन उर साल को ।

जाहि के प्रताप से मलिन आफताप होत,
ताप तजि दुज्जन करत बहुख्याल को ।

साज सजि गन, तुरी, पैदर कतार दीन्हें,
भूषण भगत ऐसे दीन – प्रतिपाल को ?

और राव–राजा एक मन में न लाऊँ अब,

साहू को सराहौं कै छत्रसाल को ।

इस छन्द के आधार भगीरथ दीक्षितने शिवाजी के समकालीन न मानकर इन्हें साहू का समकालीन माना था परन्तु ये दोनों के समकाली थे । तीन महाराजाओं के अतिरिक्त भूषण का सम्बन्ध रीवाँ नरेश अवधूतसिंह, कुमायूँ

नरेश ज्ञानचन्द्र, गढ़वाल नरेश फतेशाह, जयपुर नरेश सवाई जयसिंह, बूंदी नरेश रावराजा बुद्धसिंह ,अशोधरनरेश भगवन्त राय रवी ची, आदि राजाओं से भी   था । इस प्रकार अपनी काव्य प्रतिभा के साथ–साथ विभिन्न राज्यों की यात्राओं से इन्होंने देश का व्यापक अनुभव प्राप्त किया इस व्यापक अनुभव और उदात्त मनोभावना के अनुकूल भूषण तत्कालीन भारतीय नरेशों के यहाँ जाकर उनकी जो परीक्षा की उसके फलस्वरूप उन्होंने शिवाजी को ही योग्य राष्ट्रभक्त और उच्च नरेश के रूप में स्वीकार किया । इसीलिए शिवाजी को लेकर लिखे गये इनके ग्रन्थ कविसुलभ अव्युक्तियों से युक्त होने के बावजूद अर्न्गल और मिथ्या प्रशंसा के रूप में नहीं है । इनके पीछे उदात्त चारित्रिक गुणोंकी भूमिका है और ऐसे व्यक्तियो को प्रशंसित और प्रभावित करने के लिए भूषणने अपने काव्य की सृष्टि की है । शिवाजी साहू, छत्रसाल सम्बन्धी छन्दों से जहाँ एक ओर इन सम्राटों के उदात्त चरित्र, उच्चादर्श, विशाल ह्दय, और स्वाभिमानता का संकेत मिलता है । वहीं उनसे सम्बन्धित छन्दों में तत्कालीन अनेक ऐतिहासिक तथ्य भी उपलब्ध होते हैं । जिनका इतिहासकारो ने सम्यक् विश्लेषण करके यह निष्कर्ष दिया है कि भूषण द्वारा वर्णित तथ्य ऐतिहासिक है । काल्पनिक नहीं । जैसा की पहले उल्लेख कर चुकी हूँ भूषण ने 'शिवराज भूषण', 'शिवाबावनी' और 'छत्रसाल दशक', नामक तीन ओज गुणों से समन्वित एवं राष्ट्रीय चेतना से छलकते तीन वीरकाव्यों रचना की थी, जिसके अन्तर्गत भूषणने अपनी उदात्त भावना और उस समय के भारतीय संस्कृति के एवं जातीयता के उन्नायक दो महान नायकों के शौर्य पराक्रम एवं वदान्यता का अत्यन्त सजीव और मार्मिक चित्रण किया है । इनमें शिवाजीने जहाँ दक्षिण भारत में राष्ट्र विरधी मलेक्ष शक्तियों का दमन करके न केवल एक सुखशान्ति दायक साम्राज्य की स्थापना की थी अपितु राष्ट्र की दर्पशील उस आर्य चेतना का अपनी मृतप्राय निराशा में डूबी प्रजा में एक ओजस्वी उत्साह की भावना जाग्रत कर दी । इसी प्रकार मध्य भारत के अन्तर्गत तत्कालीन राष्ट्र विरोधी सत्ता का सामना करते हुए छत्रसाल ने न केवल अपनी प्रशासित जनता के ह्दय में एक स्वतंत्र राष्ट्रप्रेम की भावना जगाकर उन्हें सुख और समृद्धि से पूर्ण जीवन जी ने के लिए एक प्रशस्त वातावरण का निर्माण किया । अत: उस काल के परिवेश को देखते हुए इन दो महान राष्ट्र नायकों ने जो भारतवर्ष की विलुप्त होती हुई दर्पपूर्ण राष्ट्रीय चेतना कोजगाने का प्रशस्य कार्य किया उसे देखकर कोई भी स्वाभिमानी राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण कवि इन्हें अपना आदर्श मानने के लिए विवश होगा ही । भूषण ने इन दो राष्ट्र नायकों के सुयश और गौरवमयी कीर्तिका जिस उदात्त वीर भावना से ओतप्रोत

आख्यान प्रस्तुत किया है उसे सुविधा की दृष्टि से कई भागों में विभक्त किया जा सकता है । (१) स्तुतिपरक वीरभावना (२) जातीय परम्परा से युक्त पौराणिक वीर भावना (३) तत्कालीन ऐतिहासिक परिवेश को चुनौती देनेवाली वीरभावना (४) जातीयता से समन्वित धार्मिक वीर भावना । (५) शौर्य से संवलित युद्ध सम्बन्धी वीर भावना । (६) दान सम्बन्धी वीर भावना (७) तत्कालीन ऐतिहासिक स्खलनों के परिशोधनार्थ ओजस्वी कार्यों से युक्तवीर भावना ।

कविने शिवाजी के जन्म से लेकर "हिन्दूपद पादशाही" की स्थापना तक जितनी भी ऐतिहासिक घटनाएँ शिवाजी के जीवन से सम्बन्धित है उनका ओजस्वी भाषा में वर्णन किया है । उन सभी में वीर रस की प्रधानता है । महाराज शिवाजी की वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन उनकी रचना शिवाबावनी में उपलब्ध होता है । जिसके अन्तर्गत अपनी चर्तुरंगिणी सेना सजाकर सरजा शिवाजी के युद्ध प्रस्थान का अत्यन्त मार्मिक उत्साहभाव की जाग्रत करने वाला औजस्वी वर्णन मिलता है । यथा –

"साजि चतुरंग वीर रंग मैं तुरंग चढ़ि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है ।
भूषण भगत नाद विहद नगारन को नदी नदमद गब्बरन के रलत है ।
ऐल फैल खैल–भैल खलक मैं गौल–गैल, गजन की ढेल पेल सैल उलसत है ।
तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत, जिमि, धारा पर पारा पाराबार यों हलत हैं ।"

एक महावीर पुरूष के रूप में ही नहीं भूषणने शिवाजी को एक ऐसे महापुरूष के रूप में प्रस्तुत किया है जिसने अपने राष्ट्र की रक्षा, धर्म की रक्षा और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए मुगलों से न केवल टक्कर ली अपितु मुस्लिम अत्याचारों का दमन करते हुए हिन्दु धर्म और हिन्दुत्व की रक्षा भी की थी यथा –

"वेदराखे । विद्यित पुरान परसिद्ध राखे,
रामनाम राख्यों अति रसना सुघर मैं ।
हिन्दु न को चोटी–रोटी राखी है सिपाहिन की,

कांधे मैं जनेऊ राख्यो माला राखी गर मैं ।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ रायो पात साह,

बैरी पीसि राले बरदान राख्यो कर मैं ।

राजन की हद राखी तेग–बल सिवराज,

देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर मैं ॥

इसमें न केवल शिवाजी के धर्मरक्षक स्वरूप का निदर्शन होता है अपितु भूषण की राष्ट्रीय भावना और उसके सम्मान की रक्षा की भावना का भी भली–भाँति प्रकाशन हो जाता है । शिवाजी के युद्धों का अत्यन्त सजीव और मर्मस्पर्शी वर्णन भी भूषण की कविता में स्पष्ट प्रकाशन हुआ है । जो ओजगुण से छलाहल भरा हुआ है । वह न केवल सजीव है । अपितु हृदयस्पर्शी भी है । इस प्रकार भूषण का हिन्दी साहित्य में एक ओजस्वी कवि के रूप में विशिष्टस्थान हैं । वे वीररस के न केवल अद्वितीय कवि माने जाते है बल्कि जातीय, राष्ट्रीय, देशप्रेम की भावना की दृष्टि से आधुनिककाल में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । इसके सिवा रीतिकालीन कवियों में वे सर्वप्रथम ऐसे महान कवि दृष्टिगोचर होते है जो श्रृंगार–विलास की अपेक्षा राष्ट्रीय भावना और जातीय चेतना को अपने काव्यमें प्रमुख स्थान देते हुए दिखाई देते हैं । उन्हों ने अपने काव्य और अपने आदर्श नायकों द्वारा ऐसा भारत का ओजस्वी चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें तत्कालीन मुर्झाई और हत चेतना वाले हिन्दू समाज को वीरता और राष्ट्र प्रेम का ऐसा पाठ पढ़ाया जो निश्चय ही तत्कालीन दर्स्ता की बेड़ियों में जकड़े हुए निरीह हिन्दूओं के उत्थान का कार्य करनेवाला अमर काव्य सिद्ध होता है ।

समापन में भूषण ग्रंन्थावली – डॉ. श्याम बिहारी मिश्र

"इंद्र जिमि जं भ पर बा ड़व सु अं भ पर ।

रावन स दंभ पर रघुकुल राज है ।

पौन बारिबाह ? पर संभु रति नाह पर,

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

ज्यों सहस बाह पर राम द्विजराज है ॥

दावा द्रुम दंड पर चीता मृगु झुंड पर,

भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज हैं ।

तेजतम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,

त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है ॥[५६]

संदर्भ सूचि :

- सन्दर्भ (छत्रसाल दशक – ९–१०) भूषण ग्रन्थावली – पृष्ठ ६८ में संकलित छत्र साल दशक का दसवा छन्द
- (छन्द–२) सन्दर्भ शिबा बावनी पृष्ठ १०८
- शिवा बावनी – ३२
- कवि उ.दा.महनर छंद पृष्ठ–१७